आचार्य श्री की साधना विषयक देन

☐ श्री जशकरण डागा

"जिसने ज्ञान ज्योति से जग के, अंधकार को दूर भगाया ।
सामायिक स्वाध्याय का जिसने, घर-घर जाकर पाठ पढ़ाया ।।
जिसने धर्म साधना-बल से, लाखों को सन्मार्ग लगाया ।
जय-२ हो उस गणि हस्ति की, जिसकी शक्ति का पार न पाया ।।"

साधना : अर्थ एवं उद्देश्य—जो प्रक्रिया साध्य को लक्ष्य कर उसकी उपलब्धि हेतु की जाती है, उसे साधना कहते हैं। वैसे तो साधना के अनेक प्रकार हैं, किन्तु जो साधना साधक को बहिरात्मा से अंतरात्मा, अंतरात्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बना दे अथवा पुरुषत्व को जाग्रत कर पुरुषोत्तम बनादे, वही सर्वोत्तम साधना है। कहा भी है—

"कला बहत्तर पुरुष की, त्यां में दो प्रधान ।
एक जीव की जीविका, एक आत्म-कल्याण ।।"

जीव की जीविका से भी आत्म-कल्याण की कला (साधना) श्रेष्ठतम है। कारण जो आत्मा को परमात्मा बनादे उससे अनुत्तर अन्य कला नहीं हो सकती है। एक उर्दू कवि ने कहा है—

"अफसाना वह इन्सान को, ईमान सिखादे ।
ईमान वह इन्सान को, रहमान बनादे ।।"

ऐसी उत्तम साधना ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप रत्नत्रय से मण्डित होती है। आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म० सा० की सम्पूर्ण जीवन-चर्या ऐसी उत्तम साधना से पूरित एवं अध्यात्म ऊर्जा से ओतप्रोत थी। साठ वर्ष से भी अधिक समय तक आचार्य पद को सुशोभित करते हुए निरन्तर उत्तम साधना के द्वारा आप असीम आत्मबल को उपलब्ध हुए थे। यही कारण था कि जो भी आपके सम्पर्क में आता, आपसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। आपकी साधना

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्कृष्ट श्रेणी की थी, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण आप द्वारा मरणांतिक वेदना भी समभाव से, बिना कुछ बोले या घबराहट के शान्त भाव से सहन करना रहा है। 'सूत्रकृतांग' (१/६/३१) में कहा है—'सुमणे अहिया सिज्जा, ण य कोलाहलं करे।' अर्थात् कैसा भी कष्ट हो, बिना कोलाहल करे, प्रसन्न मन से सहन करे, वह उत्तम श्रमण है। आचार्य प्रवर ने सुदीर्घ उत्तम साधना के द्वारा समाज व राष्ट्र को जो महान् उपलब्धियाँ दीं, उनकी संक्षिप्त झलक यहाँ प्रस्तुत की जाती है।

आचार्य प्रवर की साधना की देन दो प्रकार की रही है—एक ज्ञानदर्शन-मूलक तो दूसरी चारित्र एवं त्यागमूलक जिनका क्रमशः यहाँ उल्लेख किया जाता है।

[अ] ज्ञानदर्शनमूलक उपलब्धियाँ—

(१) **अ० भा० स्तर के स्वाध्याय संघों की स्थापना**—आत्म-साधना के मूल, विशुद्ध अध्यात्म ज्ञान के प्रचार हेतु आपने रामबाण व संजीवनी समान स्वाध्याय का मार्ग प्रशस्त किया। आपके द्वारा अ० भा० स्तर पर बृहद् स्वाध्याय संघ की स्थापना की प्रेरणा दी गई। परिणामस्वरूप अ० भा० श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर गठित हुआ जिसकी शाखाएँ सवाई-माधोपुर, जयपुर, अलवर के अलावा भारत के विभिन्न सुदूर प्रान्तों में स्वतंत्र रूप से जैसे मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु आदि में भी स्थापित हुई हैं। लगभग १०-१२-शाखाएँ अभी संचालित हैं और इनके माध्यम से पर्युषण पर्व में लगभग ८०० स्वाध्यायी प्रतिवर्ष भारत के कोने-कोने में पहुँच कर धर्माराधना कराते हैं। इन स्वाध्याय संघों की उपयोगिता जानकर अन्य संप्रदायों द्वारा सुधर्मा स्वाध्याय संघ, जोधपुर, स्वाध्याय संघ, पूना, स्वाध्याय संघ, कांकरोली, समता स्वाध्याय संघ, उदयपुर आदि भी स्थापित हुए हैं।

(२) **अ० भा० जैन विद्वत् परिषद्, जयपुर**—आपकी सद्प्रेरणा से भारत के मूर्धन्य जैन विद्वानों एवं लक्ष्मीपतियों को एक मंच पर संगठित कर अ० भा० जैन विद्वत् परिषद् का गठन किया गया। इसके द्वारा विभिन्न आध्यात्मिक वियर्यों पर विशिष्ट विद्वानों से श्रेष्ठ निबन्ध तैयार कराकर उन्हें ट्रैक्ट रूप में प्रकाशित कर प्रसारित किया जाता है। ये ट्रैक्ट बड़े उपयोगी एवं लोकप्रिय सिद्ध हुए हैं। इसके अतिरिक्त इस परिषद् द्वारा प्रतिवर्ष विभिन्न स्थानों पर विभिन्न जैनाचार्यों के सान्निध्य में महत्त्वपूर्ण विषयों पर संगोष्ठियां आयोजित की जाती हैं जिनमें भारत के कोने-कोने से आए विद्वान् शोध-निबन्ध प्रस्तुत करते हैं जिनका जन साधारण के लाभ हेतु संकलन भी किया जाता है। इस

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

परिषद् में दिगम्बर, मन्दिरमार्गी, तेरापंथी, स्थानकवासी व जैनेतर विद्वान् भी सम्मिलित हैं। परिषद् से समाज में एकता व प्रेम बढ़ाने में बड़ा सहयोग मिला है।

(३) **सम्यग्ज्ञान प्रसार एवं ज्ञानसाधनार्थ केन्द्र की स्थापना**—सम्यग्ज्ञान का अधिकाधिक प्रसार हो एवं समाज में ज्ञानी साधक तैयार हों, इस हेतु आपकी सद्प्रेरणा से अनेक संस्थाएँ स्थापित हुई हैं जिनमें मुख्य इस प्रकार हैं—

(i) **सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर**—यह लगभग पचास वर्षों से निरन्तर जीवन निर्माणकारी साहित्य प्रकाशन का कार्य कर रहा है। इसके द्वारा मासिक पत्रिका 'जिनबाणी' का भी प्रकाशन होता है।

(ii) **श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, जलगाँव**—जैन धर्म एवं जैन दर्शन के चारित्रनिष्ठ शिक्षक एवं प्रचारक तैयार करने के लिए इसकी स्थापना की गई है।

(iii) श्री जैन रत्न माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़।

(iv) श्री जैन रत्न पुस्तकालय, जोधपुर।

(v) आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जयपुर।

(vi) आचार्य श्री शोभाचन्द्र ज्ञान भण्डार, जोधपुर।

(vii) श्री वर्धमान स्वाध्याय जैन पुस्तकालय, पिपाड़ सिटी।

(viii) श्री जैन इतिहास समिति, जयपुर—इसके द्वारा 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' चार विशाल भागों में प्रकाशित हो चुका है। यह आचार्य श्री की साहित्यिक साधना की विशिष्ट देन है।

(ix) श्री सागर जैन विद्यालय, किशनगढ़।

(x) श्री जैन रत्न छात्रालय, भोपालगढ़।

(xi) श्री कुशल जैन छात्रालय, जोधपुर।

(xil) जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर—सन् १६७३ में इसकी स्थापना की गई थी, जो अपने उद्देश्य—प्राकृत भाषा एवं जैन विद्या के विद्वान् तैयार करने को, सफलतापूर्वक निभा रहा है।

(४) **आध्यात्मिक उत्तम साहित्य का सृजन**—देश में सम्यग्ज्ञान की ज्योति जलाकर अज्ञान एवं मिथ्यात्व के अंधकार को मिटाने हेतु आपने वर्षों आगम व इतिहास के सृजन, संवर्धन, एवं संपोषण के लिए नियमित घंटों समय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

देकर तत्सम्बन्धी विशाल कोष समाज को समर्पित किया है। आपने लगभग पचास ग्रंथों की रचना की जिनमें मुख्य प्रकाशन इस प्रकार हैं—

(i) जैन धर्म का मौलिक इतिहास भा० १ से ४ तक।

(ii) जैनाचार्य (पट्टावलि) चरित्रावलि।

(iii) गजेन्द्र व्याख्यान माला भा० १ से ७ तक।

(iv) आध्यात्मिक साधना भा० १ से ४ तक।

आप द्वारा निम्न आगमों की टीका एवं संपादन भी किया गया—

(v) बृहत्कल्प सूत्र।

(vi) प्रश्न व्याकरण सूत्र।

(vii) अंतगड़दसा।

(viii) दशवैकालिक सूत्र।

(ix) उत्तराध्ययन सूत्र।

(x) नन्दी सूत्र आदि।

(५) आध्यात्मिक ज्ञान प्रसारक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन— चतुर्विध संघ एवं समाज में सम्यग्ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की त्रिवेणी निरन्तर गतिमान हो, प्रवाहित होती रहे, जन-जन में जाग्रति आती रहे, इस हेतु निम्न पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ हुआ—

(i) जिनवाणी (ii) वीर-उपासिका (iii) स्वाध्याय शिक्षा (iv) रत्न श्रावक संघ का मासिक बुलेटिन।

[ब] चारित्र एवं त्यागमूलक उपलब्धियां—

आपकी चारित्रिक योग साधना अजब-गजब होने से उससे समाज को अनेक प्रकार की चारित्रिक, नैतिक एवं पारमार्थिक उपलब्धियां मिली हैं। इनमें मुख्य इस प्रकार हैं :—

(१) अ० भा० सामायिक संघ की स्थापना—भारत के सुदूर प्रान्तों में भी आपने अनेक परिषह सहन करते विचरण कर, नगर-२, ग्राम-२ में नियमित सामायिक व्रत धारण कराने का एक विशिष्ट अभियान चलाया। परिणामतः

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हजारों बाल, युवा व वृद्ध जिन्होंने कभी पूर्व में सामायिक न की थी, वे भी नियमित सामायिक करने लगे और इसके व्यवस्थित प्रचार-प्रसार हेतु अ० भा० सामायिक संघ, जयपुर की स्थापना भी की गई। इस अभियान से एक विशेष लाभ यह हुआ कि अनेक स्थानों पर जहाँ धर्म-स्थानक संतों के रहने के समय या पर्युषण के समय को छोड, बंद और वीरान पड़े रहते थे, उनकी सफाई तक नहीं होती थी, वहां पर अब नियमित सामूहिक सामायिकें होने लगीं और जहाँ साधना स्थल नहीं थे, वहाँ भी सामायिक साधनार्थ उपयुक्त धर्मस्थान निर्मित हो गए। धर्म साधना का प्रचार अधिकाधिक हो, इस हेतु अ० भा० सामायिक संघ के अतिरिक्त निम्न संस्थाएँ भी आपकी सद्प्रेरणा से संस्थापित हुईं :—

(i) अ० भा० श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर।
(ii) अ० भा० श्री महावीर जैन श्राविका संघ, जोधपुर।
(iii) श्री जैन रत्न युवक संघ, जोधपुर।
(iv) श्री जैन रत्न युवक संघ, सवाईमाधोपुर आदि।

(२) **जीवदया सम्बन्धी पारमार्थिक प्रवृत्तियाँ**—आचार्य प्रवर दया एवं करुणा के अनन्य स्रोत थे, जिससे आपकी साधना की एक प्रमुख देन जीवदया की पारमार्थिक प्रवृत्तियों का आरम्भ और कल्याण कोषों की स्थापना है। नगर-२ ग्राम-२ में जीवदया सम्बन्धी अनेक मंडल, संघ व संस्थाएँ स्थापित हुईं हैं जिनसे हजारों दीन-दुःखी, अनाथ, अपंग, निर्धन, संकटग्रस्त भाई-बहिन, छात्र-छात्राएँ विभिन्न प्रकार की सहायता प्राप्त कर लाभान्वित होते हैं। निरीह पशु-पक्षियों को भी दाना-पानी चारे आदि से राहत पहुँचाई जाती है तथा वध के लिए जाते अनेक पशुओं को भी अभय दान दिलाया जाता है। ऐसी पारमार्थिक संस्थाओं में मुख्य इस प्रकार हैं :—

(i) भूधर कल्याण कोष, जयपुर।
(ii) श्री महावीर जैन रत्न कल्याण कोष, सवाईमाधोपुर।
(iii) स्वधर्मी सहायता कोष, जोधपुर।
(iv) स्वधर्मी सहायता कोष, जयपुर।
(v) श्री जीवदया मण्डल ट्रस्ट, टोंक।

इस ट्रस्ट के द्वारा न केवल असहाय मनुष्यों को सहायता व राहत पहुँचाई जाती है वरन् पशु-पक्षियों को राहत पहुँचाना, पशु-बलि रुकवाना व शाकाहार का प्रचार करना आदि कार्य भी किए जाते हैं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य प्रवर की प्रेरणा से अनेक पारमार्थिक औषधालय भी अनेक स्थानों पर स्थापित हुए हैं जिनमें नित्य सैंकड़ों बिमार निःशुल्क दवा आदि का लाभ उठाते हैं। आपने पशु-बलि जहाँ भी होती देखी, उसको अपने चारित्रिक बल से रुकवाया। उदाहरणार्थ टोंक जिले की तहसील निवाई के मूंडिया ग्राम में सैंकड़ों वर्षों से बिणजारी देवी मन्दिर में प्रतिवर्ष रामनवमी को पाड़े की बलि होती थी। आपकी सद्प्रेरणा से वह अब सदा के लिए बन्द हो चुकी है।

(३) निर्व्यसनी व प्रामाणिक समाज का निर्माण—आचार्य प्रवर ने व्यसन एवं अनैतिकता को समाज से दूर करने हेतु अपनी आत्म-साधना के साथ-२ इसके लिए भी एक अभियान चलाया। जो भी आपके संपर्क में आता उसे निर्व्यसनी एवं प्रामाणिक जीवन यापन करने को प्रेरित करते और तत्सम्बन्धी संकल्प भी कराते। विशेषकर जब भी आपके सान्निध्य में विद्वत् संगोष्ठी होती तो उसमें सम्मिलित होने वाले सभी विद्वानों को तत्सम्बन्धी नियम की प्रसादी देते थे। जैसे—(i) धूम्रपान न करना (ii) नशा न करना (iii) मांस, अंडे आदि अभक्ष्य सेवन न करना (iv) रात्रि भोजन न करना (v) जमीकंद का सेवन न करना (vi) रिश्वत लेना-देना नहीं (vii) अनैतिक व्यापार करना नहीं आदि। निर्व्यसनी और प्रामाणिक होने के लिए आपकी रचना की निम्न पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं—

निर्व्यसनी हो, प्रामाणिक हो, धोखा न किसी जन के संग हो।
संसार में पूजा पाना हो, तो सामायिक साधन करलो ॥
साधक सामायिक संघ बने, सब जन सुनीति के भक्त बनें।
नर लोक में स्वर्ग बसाना हो, तो सामायिक साधन करलो ॥

(४) सम्प्रदायवाद का उन्मूलन—जब आप लघु वय में आचार्य पद पर आसीन हुए तो उस समय स्थानकवासी समाज सम्प्रदायवाद की कट्टरता से छोटे-२ वर्गों में विभाजित था तथा परस्पर वाद-विवाद व राग-द्वेषवर्धक प्रकृत्तियों का बड़ा जोर था। आपने समाज को अनेकान्त और स्याद्वाद के सिद्धान्तों के मर्म को समझाकर सम्प्रदायवाद के नशे को दूर किया। संपूर्ण समाज में प्रेम और संघटन का प्रसार किया। संपूर्ण स्थानकवासी समाज एक हो इस हेतु आपने न केवल प्रेरणा दी वरन् जब संघ हित में आवश्यक समझा तो आचार्य पद का भी स्वेच्छा से त्याग कर, सभी सम्प्रदायों को बृहत् श्रमण संघ में विलीन हो एक होने का अद्भुत पाठ पढ़ाया। बाद में जब श्रमण संघ में शिथिलाचार बढ़ा और वह नियंत्रित न हो सका, तो चारित्रिक विकृतियों से संघ सुरक्षित रहे, इस हेतु पुनः रत्न संघ की स्थापना की जो बिना सम्प्रदायवाद के शुद्धाचार के पोषण व संरक्षण के लिए कार्यरत है। इस रत्न संघ के अनुयायी सभी संप्रदायों के साथ उदारतापूर्ण व्यवहार करते हैं और उन सभी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

संत-सतियों का पूर्ण आदर-सत्कार व भक्ति करते हैं जो शुद्धाचारी हैं और रत्नत्रय की साधना शासनपति भ० महावीर की आज्ञा में रहकर करते हैं।

(५) चारित्रिक साधना की विशिष्ट देन—आचार्य प्रवर दस वर्ष की लघुवय में दीक्षा ले अहर्निश रत्नत्रय की साधना में दृढ़ता के साथ ७१ वर्ष तक रत रहे। आप न केवल ज्ञानाचार्य थे वरन् कलाचार्य एवं शिल्पाचार्य भी थे। आप जीवन जीने की सच्ची कला व जीवन निर्माण की अद्भुत शक्ति के धारक थे। अखंड बाल ब्रह्मचारी, उत्कृष्ट योगी तथा निर्दोष निर्मल तप-संयम की आराधना व पालना से आप में अद्वितीय आत्मशक्ति विकसित हो गई थी, जिसे लोक भाषा में 'लब्धि' कहते हैं। इसी कारण आपने जब कभी जिस पर भी तनिक दया दृष्टि की तो उसकी मनोकामना शीघ्र पूर्ण हो जाती थी। इसके अनेक उदाहरण हैं। आप पर उर्दू कवि की यह उक्ति सर्वथा लागू होती थी—

'फकीरों की निगाहों में अजब तासीर होती है।
निगाहें महर कर देखें तो खाक अक्सीर होती है॥'

आपकी विशिष्ट साधना की लब्धि से सैंकड़ों भक्तों के दुःख बिना किसी जंत्र-मंत्र के स्वतः दूर हो जाते थे जिससे जिनशासन की महती प्रभावना हुई है। ऐसी चामत्कारिक सत्य घटनाओं के अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं।

कुछ प्रमुख घटनाओं का संकेत रूप में उल्लेख यहाँ किया जाता है। जैसे सुदूर रहकर अप्रत्यक्ष में मांगलिक से ही नेत्रज्योति का पुनरागमन होना, जिनके लिए डॉक्टर विशेषज्ञों ने चिकित्सा हेतु असमर्थता व्यक्त कर दी, ऐसी भयंकर दुसाध्य बीमारियों से भी मात्र आपके मांगलिक श्रवण से बिना ऑपरेशन या चिकित्सा के ठीक होना। रास्ता भटकते यात्रियों के द्वारा आपको स्मरण करने पर तत्काल उन्हें मार्गदर्शक मिलता और मार्ग बताकर उसका गायब हो जाना, रजोहरण व मांगलिक से सर्प-जहर उतरना, संतों के संकट दूर होना, सैंकड़ों वर्षों से चली आ रही पशुबलि को सामान्य कार्यकर्ता के माध्यम से ही सदा के लिए रुकवा देना। नागराज के प्राण बचाना व उसका परम भक्त हो पुनः-पुनः आचार्य श्री की सेवा में प्रगट होना तथा अंतिम समय पर्यंत तक उसके द्वारा भक्ति प्रदर्शित करना इत्यादि-२।

आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म० सा० की महान् और आदर्श साधना से समाज, देश व विश्व को जो उपलब्धियाँ मिली हैं, उनका संक्षिप्त वर्णन यथा जानकारी यहाँ किया गया गया है। इनसे विश्व के सभी प्राणी वर्तमान में ही नहीं भविष्य में भी लाभान्वित होते रहें, यही मंगल भावना है।

—डागा सदन, संघपुरा, टोंक (राजस्थान)

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org